ISSN 0973-8541, HUMANITIES AND DEVELOPMENT, VOL.19, No.4, Oct. – Dec., 2024/49

राष्ट्रवाद के उत्थान में महिलाओं की भूमिका

भारत गौतम एवं सच्चिदानन्द चौबे

https://doi.org/ 10.61410/had.v19i4.213

शोध–सारांश

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भूमिका का इतिहास बड़ा ही महत्त्वपूर्ण है। महिलाओं की राष्ट्रीय आन्दोलन में देश के सभी क्षेत्रों की महिलाओं की भूमिका रही है। स्वदेशी आन्दोलन ने भारतीय राष्ट्रवादी आन्दोलन की भागीदारी को अत्यधिक उत्प्रेरित किया था। शिक्षा, महिला संगठनों एवं बढ़ती राजनीतिक भागीदारी के माध्यम से महिलाओं के जीवन में महत्त्वपूण परिवर्तन आया है। राष्ट्रवादी संघर्ष के समय महिलाओं ने बड़े जोश के साथ सभी आन्दोलन और प्रदर्शनों में प्रतिभाग किया। उन्होंने अपने राजनीतिक संघों का भी गठन किया और यथासम्भव अधिक से अधिक राजनीतिक बैठकों में प्रतिभाग किया। महिलाओं ने भी उदार आन्दोलन में भी भाग लिया था।

शब्द–संकेत– आन्दोलन, राष्ट्रहित, जागृति, असमानता, संघर्ष, सशक्तिकरण, प्रगतिशीलता।

शोध–पत्र

सैद्धान्तिक रूप से राष्ट्रवाद एक आध्यात्मिक एवं मनोवैज्ञानिक विचारधारा है जिसमें एकत्व के आधार पर राष्ट्रीय भावना का विकास राष्ट्र के जनमानस में होता है। जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा एवं मूल्य समान ऐतिहासिक धरोहर के रूप में भौगोलिक एकरूपता एवं आर्थिक हित जैसे तत्वों के आधार पर राष्ट्र के प्रति उसके नागरिकों में राष्ट्रीय भावना जागृत होना ही राष्ट्रवाद का प्रमुख उद्देश्य होता है।

भारत में राष्ट्रवाद का आरम्भ मौर्यकाल से माना जा सकता है। जहाँ आचार्य चाणक्य द्वारा सम्राट चन्द्रगुप्त मौर्य की मनःस्थिति में राष्ट्र के प्रति समर्पण की भावना जागृत कर विजेता के रूप में प्रस्तुत किया था। राजनैतिक रूप से उस प्रस्थिति में सम्पूर्ण राष्ट्र संगठित होकर राष्ट्रहित में कार्य करने की दिशा तय कर दी थी। जो आज के परिवेश में भी कहीं न कहीं प्रत्येक भारतीय के मन में विद्यमान है। राणाप्रताप से लेकर स्वतन्त्रता पूर्व 1857 की क्रान्ति में भी राष्ट्रवाद की झलक स्पष्ट रूप से दृष्टिगोचर होती है।[1]

प्राचीनकाल से लेकर वर्तमान तक न केवल भारत में वरन् वैश्विक धरा के जनमनस में व्याप्त धार्मिक भावनाओं के शोषण से ही ऐसे निम्नकोटि के स्वार्थों का पोषण होता रहा है। प्रगतिशील देशों के युगद्रष्टा कर्णधारों ने धर्म और राजनीति की पूर्ण पृथकता से जनहितकारी सिद्धान्तों का प्रतिपादन किया तथा आधुनिक समाज एवं सत्ता का भी आधार बनाया है जिसमें कहीं न कहीं पंथवादी भेदों से ऊपर उठकर मानवतावाद के प्रति आस्थावान बनाने की नीति का निर्माण किया गया, उसमें स्त्री–पुरुष का भी भेद समाप्त करता है।[2]

पारम्परिक रूप से भारत में महिला राष्ट्रवाद का प्रथम लक्ष्य लैंगिक न्याय तथा महिला सशक्तिकरण को प्राप्त करना था। बिना किसी शक्ति के कोई व्यक्ति या राष्ट्र निर्बाध गति से अपना लक्ष्य प्राप्त नहीं कर सकता है। भारतीय समाज में महिलाओं की स्वायत्त स्थिति ने जीवन के विभिन्न क्षेत्रों में पुरुषों और महिलाओं की समानता को इस प्रकार सुनिश्चित किया कि वह एक–दूसरे के पूरक बन गये। अनेक ऐसी सामाजिक बुराइयों जिनका महिलाओं की पद एवं प्रतिष्ठा पर ऐसी विपरीत प्रभाव

शोधछात्र–इतिहास सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर
आर्चाय सहायक– इतिहास, सिद्धार्थ विश्वविद्यालय, कपिलवस्तु, सिद्धार्थनगर

पड़ रहा था जो कहीं न कहीं पुरुषों के प्रभुत्व के कारण नहीं कहा जा सकता है बल्कि धार्मिक परम्पराओं के भाग थे अथवा इतिहास में किसी समय लोगों की सामाजिक रीतियों, परम्पराओं का हिस्सा कहा जा सकता है।[3] भारत में महिला आन्दोलन महिलाओं की प्रस्थिति में सुधार का प्रारम्भिक प्रयास 19वीं शताब्दी में राजा राममोहन राय, दयानन्द सरस्वती, ईश्वरचन्द्र विद्यासागर जैसे समाज सुधारकों की दृष्टि रही है। स्वाभाविक रूप से महिला आन्दोलन के मुद्दों को हिन्दू समाज द्वारा क्रूर और अमानवीय सामाजिक रीति–रिवाजों एवं परम्पराओं द्वारा महिलाओं को मुक्त कराने के लिए आबद्ध था।

समाज सुधार संगठनों यथा– ब्रह्म समाज और आर्य समाज द्वारा संगठित महिला मण्डलों ने महिलाओं को समाज में अधिक सक्रिय भूमिका निर्वहन करने के लिए संगठित होने तथा घर से बाहर निकलने की भावना जागृत करने का महत्वपूर्ण लक्ष्य पूरा किया था। रानाडे जैसे क्रान्तिकारी नेताओं ने हिन्दू समाज जो कि महिलाओं की पद और प्रतिष्ठा के सन्दर्भ में पूर्वाग्रह से ग्रसित था। सामाजिक–आर्थिक रीति–रिवाजो को सुधारने का बड़ा उत्तरदायित्व निर्वहन किया था। वास्तव में भारत में महिला आन्दोलन का प्रारम्भिक प्रयास पुरुषों द्वारा ही शुरू किया गया जिसमें सामाजिक, धार्मिक सुधार आन्दोलनों का नेतृत्व भी समाहित है। किन्तु पारिवारिक उत्तरदायित्वों से महिलाओं को मुक्ति के प्रति बढ़ते विवाद के बीच अनेकों महिलाएँ मुख्य रूप से सामाजिक सोपान क्रम में उच्च वर्ग से आती थीं। इस देश में महिलाओं के आन्दोलन को संचालित करने का नेतृत्व किया था।[4]

स्वामी विवेकानन्द ने राष्ट्रवाद के धार्मिक सिद्धान्त का प्रतिपादन किया था। उनका विचार था, कि हमारा धर्म ही हमारे राष्ट्र का प्राण है। वहीं लोकमान्य तिलक ने 'स्वतन्त्रता हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है' के माध्यम से भारतीय संस्कृति की एकता को ही राष्ट्रवाद का केन्द्र बनाया था। तिलक हिन्दू राष्ट्रवाद के सचेतक ही नहीं बल्कि सम्पूर्ण राष्ट्र के प्रणेता कहे जा सकते हैं। श्री अरविन्द का कथन है कि ''राष्ट्रवाद एक राजनीतिक कार्यक्रम मात्र ही नहीं है, बल्कि राष्ट्रवाद एक धर्म है, जो ईश्वर की ओर से आया है, जिसका पालन प्रत्येक व्यक्त को करना चाहिए। अरविन्द ने ही राष्ट्रीय जीवन में एक नई चेतना का संचार किया था।[5]

भारतीय राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रभाव में जनजागरण के कारण भारत की महिलाओं में चेतना वृद्धि से ही राष्ट्रवाद के सूत्र प्रस्फुटित होने लगे थे, इसी से विविध गतिविधियों में महिलाओं को प्रतिभाग सुनिश्चित होने लगा। राष्ट्रीय आन्दोलन की मुख्यधारा में महिलाओं की भागीदारी से जहाँ राष्ट्रीय आन्दोलन की नई ऊर्जा प्राप्त हुई बल्कि इस ऊर्जासे महिलाएं भी ओत–प्रोत हुई। यहीं से महिलाओं के उस सशक्तिकरण का प्रयास सार्थक होता दिखाई पड़ रहा है जहाँ यह कहा जाता था कि महिलाएँ घर की चहारदीवारी में कैद हैं। महिलाएँ अब पुरुष सहभागी होकर राष्ट्रवाद की गतिविधियों में सम्मिलित हुई।

राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की सहभागिता सुनिश्चित करने में तत्कालीन नेतृत्व की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। महिलाओं की व्यापक भागीदारी से न केवल पुरुष प्रभुत्व वाले राष्ट्रीय संघर्ष का स्वरूप परिवर्तित हुआ है, बल्कि महिलाओं का अपने घर से बाहर निकलने तथा राष्ट्रीय आन्दोलन के विषय में समान भागीदारी का अवसर भी प्राप्त हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं की भागीदारी को प्रोत्साहित करने के लिए उनके सामाजिक उत्तरदायित्वों को क्षति पहुँचाये बिना राजनीति भी निर्धारित की। यह महिलाओं के लिए आन्दोलन हेतु महत्त्वपूर्ण मोड़ सिद्ध हुआ। राष्ट्रीय आन्दोलन में महिलाओं को महत्त्वपूर्ण स्थान दिलाने में सुभाषचन्द्र बोस के योगदान को भी नकारा नहीं जा सकता है।[6]

स्वाधीनता आन्दोलन में अनेक महिलाएँ, बहनों ने अपने पुत्रों, पतियों को खोकर विधवा हुई, घर बरबाद हो गये। महिलायें ही सर्वाधिक पीड़ा झेलीं, वह अनेक स्थानों पर अपनी अस्मिता खोकर स्वतन्त्रता प्राप्ति में भागीदार बनी थीं। महिलाओं ने न केवल अपनी भूमिका निभाई बल्कि अस्त्र–शस्त्र सूचना आदान–प्रदान, क्रान्तिकारियों की शरण स्थली एवं धन एकत्र करने में भी उन्होंने अपनी

महत्त्वपूर्ण भूमिका निभायी थी। उनमें मैडम भीकाजी कामा, भगिनी निवेदिता, सरला देवी चौधरी, कुमारी प्रीतिलता बद्देदार, कल्पन दत्ता, वीना दास, शान्तिघोष, सुनीति चौधरी, उज्ज्वला मजूमदार, सुचेता कृपलानी, ऊषा मेहता, सुभद्रा जोशी, पूर्णिमा बनर्जी, सुशील नैयर, अम्मू स्वामीनाथन जैसी महिलाओं ने अपने राष्ट्रहित के लिए लड़ते हुए शहीद हो गयीं।

भारतीय इतिहास में महात्मा गाँधी ऐसे व्यक्ति थे, जिन्होंने सर्वप्रथम प्रत्येक भारतीय के भीतर राष्ट्रवाद की ऐसी सोच भर दी थी कि वह देश को अपना समझ कर उसे निर्मित करने में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका मानने लगा था। महात्मा गाँधी द्वारा जागृत राष्ट्रवाद का ही परिणाम था कि स्वतन्त्रता संघर्ष में सभी नर–नारी, बाल–वृद्ध, ब्राह्मण, अछूत सभी देश के लिए अपना सब कुछ त्याग करने हेतु तैयार थे। यही महात्मा गाँधी द्वारा जागृत राष्ट्रवाद का परिणाम था। महात्मा गांधी के इसी राष्ट्रवाद के परिणामस्वरूप सुभाषचन्द्र बोस ने उनको राष्ट्रपिता कहा और इसी राष्ट्रवाद ने देश को स्वतन्त्रता प्रदान की।[7]

भारतीय स्वाधीनता संग्राम में संलग्न राष्ट्रवादी नेताओं ने आर्य समाज के सामाजिक मंतव्यों का गहरा पड़ा है। लाला लाजपतराय और स्वामी श्रद्धानन्द जैसे राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय नेताओं पर स्वामी दयानन्द की समाज सुधार सम्बन्धी विचारधारा का व्यापक प्रभाव पड़ा। अन्य राष्ट्रवादी नेताओं ने भी स्वामी दयानन्द सरस्वती की विचारधारा से प्रेरित होकर समाजसुधार का प्रयत्न किया। रानाडे ने स्पष्टतः कहा कि बिना सामाजिक समानता के राजनीतिक समानता नहीं आ सकती। ऐनीबेसेण्ट ने जाति प्रथा की कटु आलोचना की और दलित जातियों के उन्नयन का समर्थन किया। गोपालकृष्ण गोखले, बालगंगाधर तिलक और मोतीलाल नेहरू जैसे कांग्रेसियों ने छुआछूत का प्रबल विरोध किया। महात्मा गांधी ने 1932 में आल इण्डिया हरिजन सेवक संघ की स्थापना करके समाज के दलित वर्ग के सुधार का प्रयत्न किया। आर्य नेताओं के विचारों से प्रभावित होकर कांग्रेस ने असहयोग कार्यक्रम में अस्पृश्यता निवारण को रखा था। 1935 के अधिनियम के अन्तर्गत विभिन्न प्रान्तों में स्थापित कांग्रेस की सरकारों ने भी दलित जातियों के उद्धार के लिए सुझाये गये आर्यसमाजी मन्तव्यों को क्रियान्वित करने का प्रयत्न किया।

राष्ट्रवादी नेताओं ने आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित होकर महिलाओं की दुर्दशा के लिए उत्तरदायी तत्व– दहेज प्रथा, बेमेल विवाह, बाल विवाह, अशिक्षा इत्यादि। राष्ट्रीय आन्दोलन में सक्रिय नेताओं ने आर्य समाज के मंतव्यानुसार हिन्दी का राष्ट्रभाषा के गौरवपूर्ण पद पर प्रतिष्ठित करने में सहयोग दिया।[8]

राष्ट्रवादी संघर्ष में सम्पूर्ण विश्व में महिलाओं ने बहुत महत्वपूर्ण भूमिका निर्वहन किया है। राष्ट्रवादी संघर्षों में यद्यपि महिलाओं ने बढ़–चढ़कर प्रयास किया फिर भी उदारवादी आन्दोलन के अन्दर महिलाओं को राजनीतिक अधिकार देने का मुद्दा विवादास्पद था। महिलाओं ने अपने राजनीतिक संगठन स्थापित किये। समाचार पत्र भी शुरू किया गया, राजनीतिक बैठकों में प्रतिभाग करना, परिणामस्वरूप महिलाओं के अधिकारों के प्रति उदारवादियों तथा शासकों के विचारों में परिवर्तन तथा महिलाओं के सामाजिक, आर्थिक तथा राजनीतिक अधिकारों का मार्ग प्रशस्त हुआ।

सन्दर्भ सूची–

1. मौर्य, रामवृक्ष, समाज, दर्शन और राजनीति, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 230
2. प्रकाश, वीरेन्द्र, हिन्दुत्व का रहस्योद्घाटन, राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली, पृ. 4
3. राय, कुमकुम, इनवेस्टीगेटिंग जेण्डर्ड रिलीजियस ट्रेडीशन्स : ए रिव्यू 'अपर्णा वसु एवं अनूप तनेजा (सं.) इण्डियन काउंसिल फार हिस्टोरिकल रिसर्च (आईसीएचआर) एण्ड नार्दर्न बुक सेण्टर, पृ. 13–23

4. चक्रवर्ती विद्युत एवं पाण्डेय, राजेन्द्र कुमार, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन विचार एवं सन्दर्भ, सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ. 337

5. मौर्य, रामवृक्ष, समाज, दर्शन और राजनीति, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 231

6. चक्रवर्ती विद्युत एवं पाण्डेय, राजेन्द्र कुमार, आधुनिक भारतीय राजनीतिक चिन्तन विचार एवं सन्दर्भ, सेज पब्लिकेशन नई दिल्ली, पृ. 339

7. मौर्य, रामवृक्ष, समाज, दर्शन और राजनीति, सत्यम पब्लिशिंग हाउस, नई दिल्ली, पृ. 231

8. सिंह, कृष्णदेव, भारतीय स्वाधीनता संग्राम में आर्य समाज का योगदान, पैसिफिक पब्लिकेशन, दिल्ली, पृ. 269